बाल साहित्य : नए संसार की खिड़की

अनिल सिंह

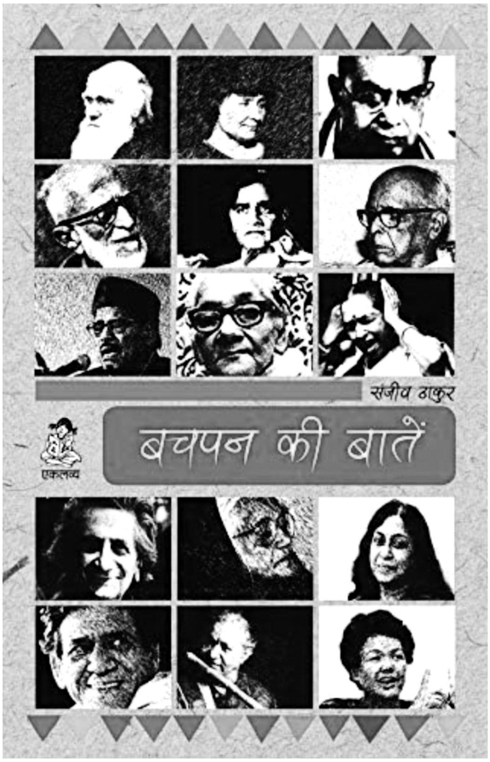
यह लेख बच्चों के लिए साहित्य की महत्ता को दर्शाता है व बच्चों की कुछ किताबों के बारे में चर्चा करता है। लेख के अन्त में कुछ किताबों की सूची भी दी गई है जो स्कूल या समुदाय के पुस्तकालयों व ऐसे अन्य मंचों के लिए उपयोगी हो सकती है। -सं.

साहित्य की दुनिया सम्भावनाओं की दुनिया है। यह हमारी आकांक्षाओं, कल्पनाओं और मानवीय उत्कर्ष की दुनिया है। बचपन इस दुनिया को गढ़ने की सबसे मुफ़ीद उम्र है। वह कितना मनोरम दृश्य होगा जब हर बच्चे के हाथ में एक सुन्दर किताब होगी या कोई बड़ा उसे कहानी पढ़कर सुना रहा होगा!

शिक्षकों और अभिभावकों की यह समस्या रहती आई है कि उत्कृष्ट बाल साहित्य की पहचान कैसे हो और वह कहाँ मिले। बाज़ार की जटिलता एक अन्य समस्या है, लेकिन अच्छे बाल साहित्य का कोई पता-ठिकाना तो मिले, उसकी कहीं चर्चा हो, तभी लोगों को उसकी कोई भनक भी होगी और तब तलब भी होगी। पिछले कुछेक वर्षों में इस दिशा में संजीदा काम हुआ है। इसमें प्रकाशकों, लेखकों, चित्रकारों, शिक्षाविदों और बाल साहित्य प्रवर्तकों का साझा हाथ है। बाल साहित्य को साहित्य की एक ज़रूरी श्रेणी मानकर उसपर ध्यान केन्द्रित करते हुए और विविध प्रयासों के ज़रिए उत्कृष्ट बाल साहित्य रचने व उसे प्रसारित करने का अनूठा काम पिछले दस-पन्द्रह सालों की बड़ी उपलब्धि कहा जा सकता है।

बाल साहित्य में उत्कृष्टता के मापदण्डों पर साझा सहमति के चलते अब इसे सिर्फ़ एक उत्पाद की तरह नहीं, बल्कि समाज और बचपन के लिए एक बेहतरीन उपहार और योगदान की तरह देखा जा रहा है। 'नेशनल बुक ट्रस्ट', 'चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट', 'प्रथम', 'तूलिका', 'एकलव्य', 'एकतारा', 'मुस्कान' समेत तक़रीबन दो दर्ज़न प्रकाशकों ने अपने इस काम को निखारा है। इस कड़ी में 'टाटा ट्रस्ट' के पराग इनिशिएटिव ने बाल साहित्य हेतु विचार-विनिमय के लिए साझा मंचों की स्थापना की है। बाल साहित्य के क्षेत्र में 'पराग ऑनर लिस्ट' 2020 से शुरू हुई, इस पहल के तहत हर साल देशभर से चयनित उत्कृष्ट बाल साहित्य की सूची जारी की जाती है।

स्कूल पुस्तकालयों, बच्चों के साथ काम करने वाली सरकारी व ग़ैर-सरकारी संस्थाओं, वैकल्पिक या अनौपचारिक शिक्षण केन्द्रों के लिए यह सूची अत्यन्त उपयोगी है, क्योंकि यह सभी उम्र, वर्ग, आर्थिक-सामाजिक पृष्ठभूमि, पठन स्तर, विविध शैली, आदि को ध्यान में रखकर तैयार की जाती है। किताबों का चयन राष्ट्रीय स्तर के एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जाता है। इसमें बाल साहित्यकार, चित्रकार, शिक्षाविद्, सामाजिक कार्यकर्ता और भाषाविद् सम्मिलित हैं। संसार की विविधता, आसपास के परिवेश, भाषा का सौन्दर्य, आशा और सकारात्मकता का



संचार, स्थानीयता एवं मौलिकता का सम्मान, जीवन से जुड़ाव, सजीव और उत्कण्ठा बढ़ाने वाला चित्रांकन, हाशियाकृत समुदाय और पात्रों की आवाज़ें, पठनीयता का रस, आदि कुछ ऐसे मापदण्ड हैं जिनके आधार पर यह किताबें चुनी जाती हैं। उनपर कई दौर की बहसें / बातें होती हैं और सहमति के आधार पर ही इनका चयन किया जाता है। 'शुरुआती पाठक', 'नव पाठक' और 'किशोर पाठक' की श्रेणियों के लिए कविता, कहानी और कथेतर विधाओं पर हिन्दी और अँग्रेज़ी की चुनिन्दा बाल साहित्य किताबों की सूचियाँ जारी की जाती हैं।

ये चयनित और अनुशंसित किताबें हमारे समय, बदलाव, सरोकारों और प्रतिबद्धताओं का आईना कही जा सकती हैं। बच्चों को साहित्य का रसिक बनाने और उन्हें एक अच्छा संजीदा पाठक बनाने में इन किताबों की बड़ी भूमिका है।

इन किताबों में विषय, परिवेश, शैली और तासीर की विविधता देखने को मिलती है, जो बाल विकास और शिक्षा के व्यापक लक्ष्यों, दोनों की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है। स्कूल पुस्तकालयों की समृद्धि और सफलता इस तरह की किताबों पर चर्चा और बच्चों के लिए उनकी सहज उपलब्धता से ही सम्भव है। *नई शिक्षा नीति, 2020* भी पुस्तकालयों, विविध साहित्य और बच्चों के साथ उसके उपयोग पर ज़ोर देती है।

नई शिक्षा नीति, 2020 में पुस्तकालयों के सन्दर्भ में प्रतिबद्धता

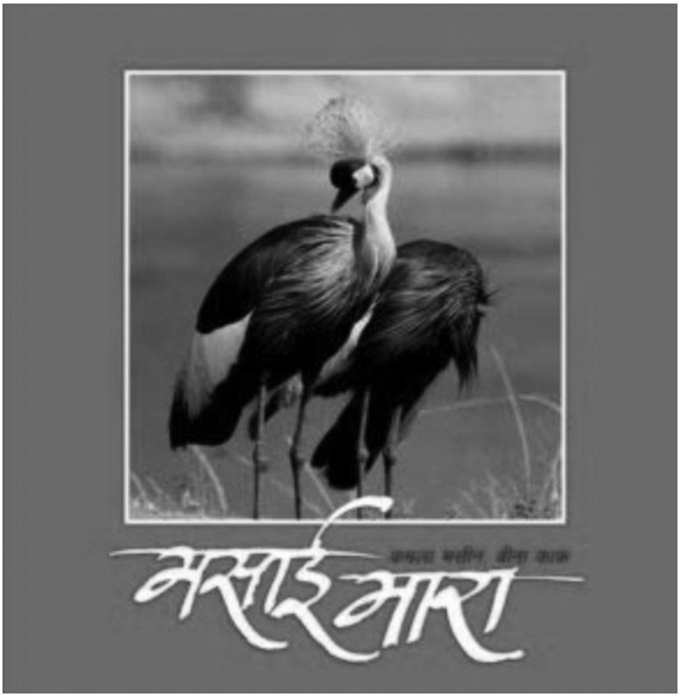
- स्कूल और सार्वजनिक पुस्तकालयों (सरकारी) को विस्तार देने एवं पढ़ने व संवाद करने की संस्कृति को विकसित करने की ज़रूरत है। इस सन्दर्भ में पढ़ने की संस्कृति विकसित करने के लिए, देशभर में सार्वजनिक और स्कूल पुस्तकालयों का विस्तार किया जाएगा।
- पुस्तकालयों में स्थानीय और क्षेत्रीय भाषाओं में, विशेष रूप से बच्चों की किताबें भी शामिल होंगी। स्कूल और स्कूल परिसरों में स्थानीय भाषाओं में पुस्तकों का चयन किया जाएगा और शिक्षक सक्रिय रूप से बच्चों को किताबें पढ़ने और उन्हें घर ले जाने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।
- पुस्तकालय के आसपास गतिविधियाँ की जानी चाहिए। जैसे– कहानी, रंगमंच, समूह में पढ़ना, लिखना और बच्चों के द्वारा लिखी गई मौलिक सामग्री व कलाओं का प्रदर्शन करना।

एक जीवन्त पुस्तकालय और उसके बेहतर इस्तेमाल की सम्भावना के लिए चुनिन्दा और उत्कृष्ट बाल साहित्य की जानकारी और उपलब्धता एक अहम क़दम है। पराग ऑनर लिस्ट में सम्मिलित कुछ किताबों का ज़िक्र विस्तार से इसलिए किया जा रहा है क्योंकि मेरी समझ से यह किताबें बच्चों के लिए अर्थपूर्ण हैं।

सबसे पहले लेखक संजीव कुमार की *बचपन की बातें* का ज़िक्र करूँगा। यह किताब प्रसिद्ध व्यक्तियों के बचपन की बात करती है। पढ़कर पता चलता है कि प्रसिद्ध-से-प्रसिद्ध व्यक्तियों का जीवन भी सामान्य चुनौतियों, सहज शैतानियों, उतार-चढ़ाव और मनमानियों से अछूता नहीं रहता। देश और दुनिया के कुछ मशहूर व्यक्तियों के बचपन की खट्टी-मीठी यादों को सँजोए हुए, इस किताब में बच्चों और बड़ों, दोनों के लिए साहित्य का भरपूर रस है। भारत के अभिनेता ओमपुरी, गायक मन्ना डे, कुंदनलाल सहगल, पक्षी विशेषज्ञ सालिम अली, बाँसुरीवादक हरिप्रसाद चौरसिया सहित वैज्ञानिक चार्ल्स डार्विन, हेलन केलर के अलावा कई और मशहूर हस्तियों के मज़ेदार जीवन प्रसंग इस किताब में शामिल हैं।

प्रख्यात बाँसुरीवादक हरिप्रसाद चौरसिया के बारे में इस किताब में कहा गया है कि उनके पिता उन्हें पहलवानी के अभ्यास में डालना चाहते थे, पर उसमें उनका मन नहीं लगता था। किस तरह वो पहलवानी के अभ्यास से बचकर निकल पाए और बाँसुरी के साधक बने, यह बच्चे ख़ुद पढ़ें या अभिभावक उन्हें साथ लेकर पढ़ें, दोनों ही अनुभव आनन्ददायी होने वाले हैं। यह किताब एक तरह से बचपन के प्रति हमारे नज़रिए को गढ़ती है और बचपन की रूढ़ छवि को तोड़ती है। बच्चे एक साझा जीवन जीते हैं, वयस्कों के नियंत्रण वाले परिवेश में वे किस तरह अपनी जगह बनाते हैं और ख़ुद को अभिव्यक्त करते हैं, यह अलग-अलग व्यक्तियों के बचपन के उदाहरणों में देखा जा सकता है।

एक अन्य किताब है जुगनू प्रकाशन की *दो बहनों की मसाईमारा यात्रा।* प्रसिद्ध नारीवादी कार्यकर्ता कमला भसीन और उनकी बहन बीना काक के संयुक्त लेखन में आई यह किताब एक ज़बरदस्त यात्रा वृत्तान्त है। किताब के बारे में एक टिप्पणी के अनुसार, “नए अनुभवों से गुज़रने और नई-नई खोजों के लिए व्यक्ति का स्वतंत्र होना ज़रूरी है।” यात्रा की बेहतर कहानियाँ अप्रत्यक्ष रूप से ‘स्वतंत्रता’ को एक मूल्य के तौर पर प्रतिष्ठित करती हैं। इस दृष्टि से यह किताब महत्त्वपूर्ण है। आमतौर पर, औरतें जब यात्रा पर निकलती हैं तो परिवार के साथ निकलती हैं जिसमें पुरुष होते हैं और वे ही यात्रा का नेतृत्व करते हैं। इस किताब में जिन



यात्रियों का विवरण है, वे बिना किसी पुरुष को साथ लिए इस यात्रा पर निकल जाती हैं। इस तरह, यात्रा वृत्तान्त के ज़रिए हौसला देने वाली यह एक महत्त्वपूर्ण किताब है।

वरुण ग्रोवर का कहानी संकलन *पेपर चोर* कुछ ऐसे अनुभवों और दमदार लेखन का नमूना है जिन्हें पढ़ते हुए आप ख़ुद को और



सब अपनी-अपनी अन्तिम इच्छाएँ पूरी करने निकल पड़े हैं। पाँच मिनट बचे हैं, और पिंटू को गुलाबजामुन तक पहुँचना है। सब तरफ़ हड़बड़ी है। लोग ईश्वर का नाम लेकर जय-जयकार कर रहे हैं कि शायद प्रलय टल जाए। पिंटू को अब सिर्फ़ गुलाबजामुन की ही पड़ी है। जब सबकुछ नष्ट ही होने वाला है तो फिर अन्तिम इच्छा क्यों बाक़ी रह जाए। अन्ततः पिंटू गुलाबजामुन की दुकान तक पहुँच गया है, अब सिर्फ़ 10 सेकण्ड ही रह गए हैं। दुकान ख़ाली है। सब बाहर निकलकर, आँख मूँदकर बस उस अन्तिम क्षण

अपने आसपास को थोड़ा और जान पाएँगे। इस संकलन में कुल 7 कहानियाँ हैं। संकलन की कहानी 'करेजवा' आपको थ्रिल और रोमांच का अनुभव देगी। दुनिया ख़त्म होने से ठीक पहले मन की इच्छा पूरी कर लेने का मानवीय उपक्रम आपको पूरे समय तक कहानी से बाँधे रखता है। "परिवार में बाक़ी सब लोगों की अन्तिम इच्छाओं के बीच पिंटू की इच्छा है गुलाबजामुन खाने की। पांडेपुर की चौमानीवाली दुकान का गुलाबजामुन, जिसके बारे में कहा जाता है कि वह कलेजे जितना नाज़ुक और रसीला है। हलवाई ग्राहकों से शर्त लगाते हैं कि प्लेट से उठाकर मुँह तक ले जाने में यह टूट न जाए तो इसके पैसे मत देना। इसलिए उस गुलाबजामुन का नाम करेजवा है। शाम को 6 बजकर 12 मिनट पर दुनिया के ख़त्म होने का ऐलान तमाम टीवी चैनलों पर हो चुका है। मम्मी-पापा अभी तक घर लौटकर नहीं आए हैं। एक बड़ा सितारा धरती से टकराने वाला है। पिंटू फ़ैसला करता है कि वह दुनिया के ख़त्म होने से पहले किसी भी हालत में करेजवा तो खा ही लेना चाहता है। घर से बाहर चारों तरफ़ भीड़-ही-भीड़ है। शायद

का इन्तज़ार कर रहे हैं, पर पिंटू दुकान में गुलाबजामुन खोज रहा है।"

ऐसा कथाशिल्प कम ही देखने को मिलता है। इसमें किशोर मन की आशंका, कौतूहल, दबी हुई इच्छाएँ और कुछ पा लेने की छटपटाहट का ऐसा जीवन्त वर्णन है कि आप बस धड़कते दिल के साथ पढ़ते चले जाते हैं। भाषा की दृष्टि से जो रवानगी हम सबको भाती है और जिससे पढ़ने का रस दूना होता हो, वह भाषा ही इन कहानियों की जान है। छोटी-बड़ी सात कहानियों का ये संकलन अनुभवों की विविधता लिए हुए है। साथ मिलकर पढ़ने पर इसका आनन्द अलग ही हो सकता है।

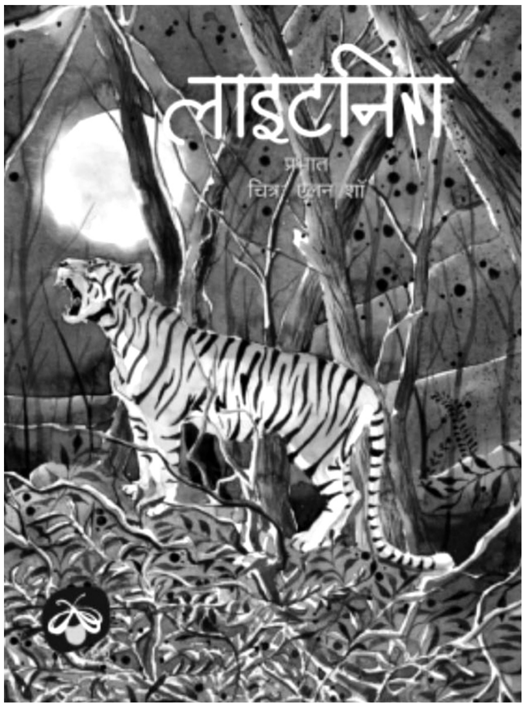
इसी सूची की एक और किताब नवीन सागर की कविताओं का ख़ज़ाना *तुम भी आना* है। इन कविताओं में एक ताज़गी है। बिलकुल नई कहन की बानगी देखिए, "नदी चढ़ी है तुम भी आना, तुम भी आना तुम भी आना, आए बादल घने उतरकर, उनसे हाथ छुआना, हवा गा रही तुम भी गाना, आना तुम भी आना..."। भाषा और

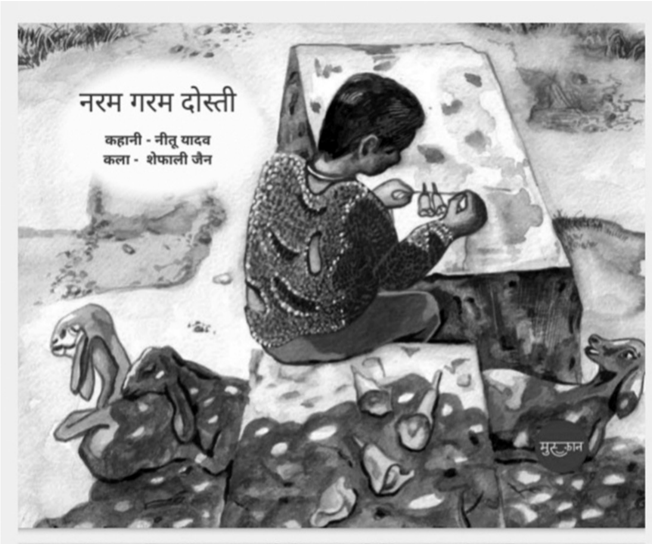


बिम्बों की जुगलबन्दी में भावनाओं की नमी और कहन की अपील आपको सहज ही छू जाएगी। या इसे देखिए, "रात अँधेरी पानी बरसा, मन हरसा मन हरसा, खिड़की लगी आज खिड़की-सी, घर को जाना घर-सा..."। इन पंक्तियों को पढ़ते हुए बारिश में गीली मिट्टी की सौंधी ख़ुशबू आ जाए तो हैरत न होगी।

इसी सूची में अरुण कमल का कहानी संकलन *एक चोर की चौदह रातें* अपने शिल्प में अनूठी किताब है। एकतारा प्रकाशन से आई इस किताब में एक चोर से लेखक की मुलाक़ात और उसकी चौदह रातों का ऐसा जीवन्त ब्योरा है, जो आपको उस चोर के बारे में नए सिरे से सोचने पर मजबूर कर देगा। एक रात वह चोर एक ऐसे घर में चोरी के लिए घुसता है जहाँ एक अकेली अपाहिज लड़की बिस्तर पर पड़ी हुई है। वह प्यास से बेहाल है, पास ही पानी का मटका और लोटा रखा हुआ है। चोर उस लड़की को पानी पिलाता है और उस लड़की से बातें करते हुए उसके बारे में और जानने की कोशिश करता है। किसी दूसरी रात वह सर्कस के एक मदारी से मिलता है जिसका जीवन उसके बन्दर और पालतू कुत्ते से बँधा हुआ है। सर्कस से अब गुज़ारा नहीं चलता, इसलिए अब मदारी चोरी की फ़िराक में रहता है। एक चोर दूसरे चोर की मदद करता है। मानवीय सादगी, त्रासदी और जीवन की आपा-धापी में लेखक के अलावा कितने ही किरदार इस चोर से जुड़ते चले जाते हैं। हर कहानी आपको एक नया अनुभव दे जाती है और आप इस कहानी में काफ़ी देर तक रहे आते हैं।

प्रभात की बिग पिक्चर बुक *लाइटनिंग* बाल साहित्य की दुनिया में एकदम नया प्रयोग है। राजस्थान की माटी में पले-बड़े प्रभात, लोक जीवन के कवि और कथाकार हैं। रणथम्भौर के जंगलों की मशहूर बाघिन 'लाइटनिंग' और उस ग्राम परिवेश से उसके दोस्ताना सम्बन्धों की ऐसी कहानी आपने





पहले कभी न पढ़ी होगी। एक सच्ची घटना को चित्र कथा में पिरोना और चित्रों व शब्दों का ऐसा ताना-बाना बुनना कि उसमें किरदार और पृष्ठभूमि जीवन्त हो उठे, यह लेखक और चित्रकार दोनों के कमाल से हुआ है। प्रभात की लेखनी और एलेन शॉ के चित्रों ने ये जादू तैयार किया है। उसका एक वाक्य आपको इसकी तासीर बताने के लिए काफ़ी है : "किसी पहाड़ी टीले पर खड़ी हो वह गरज़ती आवाज़ में पुकारती, रणथम्भौर... रणथम्भौर... रणथम्भौर... और जवाब में रणथम्भौर की हवाओं की सीटी जैसी आवाज़ गूँजती, लाइटनिंग... लाइटनिंग... लाइटनिंग..."। इस बिग बुक के चित्र आपकी देखी-अनदेखी बाघिन और जंगल की गहराई के जीते-जागते दृश्य को आपके सामने ला खड़ा कर देने की ताक़त रखते हैं। क्या बच्चे और क्या बड़े, इस किताब के जादू से कोई बच नहीं सकता।

पराग ऑनर लिस्ट में शामिल किताबें भारी विविधता लिए हुए हैं। मुस्कान प्रकाशन से आई नीतू यादव की लिखी हुई कहानी *नरम गरम दोस्ती* में अभावों के बीच दोस्ती की गर्माहट का भावपूर्ण और बारीक़ ब्योरा है। यह कहानी हमें वंचित समुदाय के जीवन यथार्थ के साथ मानवीय सरोकार से जोड़ती है। बच्चों और बड़ों, दोनों के लिए ही यह कहानी एक नया अनुभव देने वाली है।

इसी सूची में चंदन यादव की लिखी कहानियों का संकलन *बाघ भी पढ़ते हैं* शामिल है। चंदन यादव बहुत कम शब्दों में तीखी और गहरी बात कहने के फ़न में माहिर हैं। प्रचलित मुहावरों, लोकोक्तियों और क़िस्सों की ज़मीन पर वे तात्कालिक, प्रासंगिक और इस समय की ज़रूरी बात की खेती करते हैं। उनकी फ़सल पकने में ज़्यादा वक़्त नहीं लेती। वो इसके लिए ज़्यादा शब्द और वक़्त नहीं ख़रचते। कई बार तो महज़ चन्द पंक्तियों में ही उनकी कहन का मक़सद पूरा हो जाता है और पाठक को पढ़ने का पूरा रस व पूरी तसल्ली मिलती है। 'ख़तरे में साँप' शीर्षक से लिखी उनकी कहानी देखिए, "सारे जानवर थे। बात चल रही थी कि ख़तरे में अपनी जान कैसे बचाएँ। देर तक बहस चली।



अन्त में सबको बन्दर की सलाह ठीक लगी। ख़तरे के समय 'सिर पर पैर रखकर भागना' सबसे अच्छा है। मीटिंग ख़त्म हुई और सारे जानवर अपने-अपने ठिकाने चले गए। सिर्फ़ साँप एक दूसरे का मुँह तकते बहुत देर तक वहीं बैठे रहे"। महज़ छः पंक्तियों में वो कहानी का पूरा संसार रच देते हैं।

ये इस सूची में शामिल किताबों की सिर्फ़ एक झलकभर है। हर साल इस सूची में अँग्रेज़ी-हिन्दी को मिलाकर कोई दो दर्ज़न के आसपास किताबें चयनित होती हैं। यह ख़ज़ाना हमारे समय का ख़ूबसूरत साहित्यिक ख़ज़ाना कहा जा सकता है। बच्चों के साथ इसे उलटिए-पलटिए, पढ़िए और इसपर बातें कीजिए। बच्चों को साहित्य से जोड़ने, उनके पढ़ने को रचनात्मक बनाने और इन किताबों के ज़रिए एक परिवार व समाज के रूप में कहीं ज़्यादा नज़दीक आने का ये अच्छा माध्यम बन सकता है।

सूची आगे के पन्नों पर दी गई है।

अनिल सिंह पिछले 20 बरसों से भी अधिक समय से सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं। गए 15 सालों से प्राथमिक शिक्षा ही उनका प्रमुख कार्यक्षेत्र है। सात सालों तक भोपाल में वैकल्पिक स्कूल के मॉडेल आनन्द निकेतन से जुड़े रहे और वहाँ भाषा व सामाजिक विज्ञान शिक्षण का काम किया। वर्तमान में पराग के लाइब्रेरी एजुकेटर कोर्स में बतौर फ़ैकल्टी जुड़े हुए हैं।

सम्पर्क : bihuanandanil@gmail.com

पराग ऑनर लिस्ट (हिन्दी बाल साहित्य)

पराग ऑनर लिस्ट 2020			
किताब	प्रकाशक	किताब	प्रकाशक
कैसा कैसा खाना	जुगनू प्रकाशन	बिक्सू	जुगनू प्रकाशन
घुड़सवार	जुगनू प्रकाशन	रानू... मैं क्या जानूँ?	जुगनू प्रकाशन
चमनलाल के पायजामे	जुगनू प्रकाशन	रेड सन के एलियन	चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट
चश्मा नया है	एकलव्य	सप्पू के दोस्त	जुगनू प्रकाशन
छुटकी और चीरो	एकलव्य	चार चटोरे	जुगनू प्रकाशन
जब मैं मोती को घर लाई	जुगनू प्रकाशन	चींटी चढ़ी पहाड़	जुगनू प्रकाशन
टिटहरी का बच्चा	जुगनू प्रकाशन	ठाँव-ठाँव घूमा	एकलव्य
तालाब के किनारे	मुस्कान	हाउ-हाउ-हप्प	एकलव्य
पेपर चोर	जुगनू प्रकाशन	दो बहनों की मसाई मारा यात्रा	जुगनू प्रकाशन
बकरी की साइकिल	एकलव्य	बचपन की बातें	एकलव्य

पराग ऑनर लिस्ट 2021			
किताब	प्रकाशक	किताब	प्रकाशक
एक चोर की चौदह रातें	जुगनू प्रकाशन	स्कूल में हमने सीखा और सिखाया	मुस्कान
क्या तुम हो मेरी दादी?	जुगनू प्रकाशन	भूलभुलैया	एकलव्य
गोदाम	जुगनू प्रकाशन	हवा मिठाई	जुगनू प्रकाशन
जंगल किसका?	मुस्कान	चार चींटियाँ	एकलव्य
तारिक का सूरज	जुगनू प्रकाशन	तुम भी आना	जुगनू प्रकाशन
तीस की मुर्गी बीस में	एकलव्य	भाई तू ऐसी कविता क्यों करता है?	जुगनू प्रकाशन
पहली उड़ान	जुगनू प्रकाशन	मेरा खच्चर डण्डा है	एकलव्य
मिट्टी	मुस्कान		

पराग ऑनर लिस्ट 2022

किताब	प्रकाशक	किताब	प्रकाशक
एक कहानी	जुगनू प्रकाशन	केरल के केले	जुगनू प्रकाशन
ग्यारह रुपए का फाउण्टेन पेन	जुगनू प्रकाशन	बेटियाँ भी चाहें आज़ादी	प्रथम बुक्स
लाइटनिंग	जुगनू प्रकाशन	मछली नदी खोल के बैठी	एकलव्य
बस्ती में बाढ़	शहीद स्कूल	ये सारा उजाला सूरज का	एकलव्य
बीस कचौड़ी पूड़ी तीस	जुगनू प्रकाशन		

पराग ऑनर लिस्ट 2023

किताब	प्रकाशक	किताब	प्रकाशक
अकेली चींटी	जुगनू प्रकाशन	रज़ा के चित्र	जुगनू प्रकाशन
अम्मा	जुगनू प्रकाशन	गमले में जंगल	जुगनू प्रकाशन
इश्क का माता	जुगनू प्रकाशन	जिसके पास चली गयी मेरी ज़मीन	जुगनू प्रकाशन
तीसरा दोस्त	जुगनू प्रकाशन	जुगनू भाई	जुगनू प्रकाशन
दुनिया मेरी	जुगनू प्रकाशन	टके थे दस	जुगनू प्रकाशन
नरम गरम दोस्ती	मुस्कान	टिफिन दोस्त	एकलव्य
बाघ भी पढ़ते हैं	जुगनू प्रकाशन	पानी उतरा टीन पर	जुगनू प्रकाशन
मिट्टी का इत्र	जुगनू प्रकाशन	पेड़ों की अम्मा	जुगनू प्रकाशन
स्याणा	जुगनू प्रकाशन	फेरीवाले	एकलव्य
अगर मगर	जुगनू प्रकाशन	बना बनाया देखा आकाश, बनते कहाँ दिखा आकाश	जुगनू प्रकाशन
बेटा करे सवाल	एकलव्य		